कामकाजी वृद्धजनों की प्रस्थिति एवं चुनौतियां

आरती रावत,
जूनियर रिसर्च स्कॉलर,
समाजशास्त्र विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रो० सुनीता कुमार,
समाजशास्त्र विभाग,
नारी शिक्षा निकेतन पी.जी. कॉलेज,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में "कामकाजी वृद्धजनों" का तात्पर्य उन व्यक्तियों से है, जो वृद्धावस्था ;60 वर्षद्ध की आयु के बाद भी अपने जीवनयापन के लिए किसी ने किसी कार्य में संलग्न है। वृद्धावस्था मनुष्य के जीवन का वह पड़ाव है, जिसमें वृद्धजनों को कई प्रकार की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस अवस्था में व्यक्ति की परिपक्वता बढ़ती है, एवं वह शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर होता जाता है, तथा उस समय उन्हें परिवार के सहारे एवं देखभाल की आवश्यकता होती है। वृद्धजनों की देखभाल उनके परिवार के सदस्यों के द्वारा नहीं मिल पा रही है, जिससे समाज में वृद्धो की स्थिति में गिरावट आ गई है। उन वृद्धों के साथ दुर्व्यवहार होने की संभावना अधिक होती है, जो आर्थिक रूप से परिवारों पर निर्भर होते है। और अपने जीवन की सुरक्षा के लिए अपने पास आर्थिक रूप से किसी भी प्रकार की पूंजी नही बचाई। इन्ही कारणवश वह परिवारों पर निर्भर है। तथा उनकी संताने वृद्धावस्था में उनका पालन पोषण या देख–रेख नहीं करते है। तो उन्हें वृद्धावस्था में अपने जीवकोपार्जन के लिए छोटे–मोटे कार्यों में लगना पड़ता है जिसमें उन्हें विभिन्न प्रकार की समस्याएं एवं चुनौतियां का सामना करना पड़ रहा है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य लखनऊ नगर में रहने वाले वृद्धों के कार्य में संलग्न होने के पीछे के कारणों को जानना एवं वृद्धों की समस्याओं और चुनौतियों को समझना है। यह अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण पर आधारित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीय डेटा संग्रह पद्धति से आंकड़ों को संग्रहित किया गया है, तथा इस अध्ययन में उद्धेश्यात्मक निदर्शन के द्वारा इकाई का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष बताते है कि, वर्तमान में कार्य कर रहे वृद्धजनों की स्थिति समाज में अत्यधिक दयनीय और चिन्ताजनक पहलू है।

मुख्यशब्दः– *वृद्धवस्था, जीवकोपार्जन, कामकाजी वृद्धजन , सामाजिक आर्थिक स्थिति, चुनौतियां, समस्याएं, एवं परिवार।*

प्रस्तावना

वैश्विक कार्यबल (Global Workforce) परिवर्तनकारी गतिविधियों से गुजर रहा है। कामकाजी वृद्धजनों की भूमिका और योगदान महत्वपूर्ण हो रहा है। वैश्विक स्तर पर श्रम शक्ति में 55 से 65 वर्ष की आयु के कामकाजी वृद्धजनों की हिस्सेदारी वर्ष 2000 से बढ़ रही है और 2030 तक इसमें वृद्धि देखने को मिलेगी यह मुख्यता विकसित देशों में देखने को मिलेगी। कार्यबल 13.2 प्रतिशत से 17.7 प्रतिशत तक हो जाएगा जबकि विकासशील देशों में 7.9 प्रतिशत तक हो जाएगा है **(अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ आई.एल.ओ.)**। एवं विकासशील देशों में 2000 से 2030 तक कामकाजी वृद्धजनों की हिस्सेदारी 2.5 प्रतिशत तक हो जाएगी **(आई.एल.ओ. 2019)**। ये अनुभवी

पेशेवर, (कामकाजी वृद्धजन) जिन्हें "जर्मनी में वेतनभोगी और अवैतनिक सक्रिय सेवानिवृत्ति 'Retirees' को रजत श्रमिक 'Silver workers' कहा जाता है"**(Jugran Dollera.2009)**। अपने संबंधित उद्योगों के अनुभव, और सूक्ष्म समझ का खजाना लेकर आते है। यहा यह बताना महत्वपूर्ण है कि, कामकाजी वृद्धजनों का एक उल्लेखनीय पहलू उनका संचित ज्ञान और कौशल है। इनमे से कई लोगों ने अपने कौशल को निखारने और खुद को अपने–अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ के रूप में स्थापित करने मे दशकों बिताए है। चाहे वे हस्तनिर्मित शिल्प, उत्पाद, या अन्य सामान बेच रहे हों, उनका अनुभव एक अद्‌भुद पेशकश में बदल जाता है, जो उपभोक्ताओं से संबधित होता है। यहां पर सामाजिक सिद्धांत के संदर्भ में **सामाजिक विनिमय का सिद्धांत** विशेष भूमिका निभाता है। प्रस्तुत सिद्धांत **जॉर्ज सी ह्यूमंस** के द्वारा दिया गया था यह सिद्धांत सामाजिक व्यवहार और वस्तुओं के आदान–प्रदान एवं अंतक्रियाओं के द्वारा होता है। वृद्धावस्था में सामाजिक विनिमय जो मानवीय संबंधों के आदान–प्रदान के रूप में कार्य करता है इस सिद्धांत के अनुसार लोग एक दूसरे के साथ संबंधों में तभी तक बने रहते है, जब उन्हें उस संबंध से किसी प्रकार का लाभ हो रहा होता है **(Ahuja, R. (2021)**। वृद्धावस्था में यह सिद्धांत वृद्धजनों के जीवन और समाज में उनकी स्थिति को समझने में मदद करता है वृद्धजन सामाजिक संबंधों में कैसे बने रहते है, लेकिन जब वह अपना योगदान नहीं दे पाते है, तो उन्हें कैसे हासिएं (Marginal) पर धकेला जाता है, इसलिए वृद्धजन यदि कार्य में सक्रिय रहते हैं, तो उनके पास समाज के साथ आदान–प्रदान जारी रखने के लिए संसाधन हो जाते है, तथा यह अन्तःक्रिया उनकी सामाजिक मान्यता और सम्मान को बनाए रखने में मदद करता है, उनका कार्य समाज के लिए मूल्यवान और बदले में उन्हें आर्थिक निर्भरता से भी मुक्त करता है। **सक्रियता का सिद्धांत रॉबर्ट के. हैवीगर्स्ट द्वारा सन 1961** में दिया गया था यह सिद्धांत वृद्धजनों को सक्रिय, आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से जुड़े रहने के लिए प्रेरित करता है **(Teles, S., Ribeiro, O. 2019)**। वृद्धावस्था केवल निष्क्रियता या निर्भरता का समय नहीं बल्कि यह जीवन का एक सक्रिय और पूर्णकालिक हिस्सा है, जहां वृद्धजन अपनी क्षमताओं और अनुभव के द्वारा समाज और अपने जीवन में योगदान करते हैं और साथ –साथ अलगाव से बचे रहते हैं।

वृद्धजनों की स्वास्थ्य स्थिति सामान्य मनुष्य की तुलना में भिन्न होती है **WHO के अनुसार** वृद्धावस्था में होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं में शारीरिक क्षमता में कमी, मोतियाबिंद, गर्दन दर्द, पीठ, घुटनों का दर्द क्रॉनिक ऑब्स्ट्रक्टिव पल्मोनरी बीमारियां, मधुमेह, अवसाद और मनोभ्रम यह सामान्य समस्याएं है। जैसे–जैसे उम्र बढ़ती है, यह समस्याएं और भी गंभीर होने की संभावनाएं बढ़ जाती है। ये अनुभवी व्यक्ति, कार्यबल में उम्र से संबंधित रूढ़िवादिता को नाकरते हुए, उन बाधाओं का सामना करते है, जो उनकी प्रवृति को प्रभावित करते है जो उनकी कार्य की गतिविधियों में बाधा डालती है। **(K. Nagendra,2019)** हांलाकि शारीरिक सीमाएं अक्सर वृद्ध कामकाजी विक्रेताओं के लिए एक बड़ी चुनौती पैदा करती है। दूकानों का प्रबंधन, माल परिवहन, और भीड़ भरे बाजारों में संचालन करने की मांग उम्र के साथ और अधिक कठिन हो सकती है। यह शारीरिक तनाव न केवल उनकी दक्षता को प्रभावित करता है, बल्कि स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी उत्पन्न करता है। जिससे **सामाजिक निर्भरता** बढ़ जाती है। प्रस्तुत सिद्धांत **पीटर थॉमसन** द्वारा दिया गया था। प्रस्तुत सिद्धांत बताता है की, वृद्धावस्था के कारण व्यक्ति की सामाजिक निर्भरता बढ़ती है वृद्धजन परिवार और समाज पर निर्भर हो जाते है **(Thousand, P.)** और उन्हें समाज या परिवार का समर्थन नहीं मिलता है तो उन्हें अपनी आजीविका के लिए कार्य करना पड़ता है यदि समाज या

सरकार द्वारा वृद्धजनों के लिए कोई मजबूत सुरक्षा योजना नहीं बनती है। और जो पेंशन योजनाओं से वंचित रहते है। एक अध्ययन में पाया गया कि 60 साल और उससे अधिक उम्र के 24 कामकाजी वृद्ध में से केवल 5 लोग वृद्धावस्था पेंशन योजना का लाभ उठा पा रहे हैं। बाकी लोग जटिल प्रक्रियाओं, अशिक्षा और उम्र से संबंधित दस्तावेजों की कमी के कारण इस योजना से वंचित रह गए हैं। शोधकर्ता को प्रस्तुत अध्ययन में पाया कि, 54 कामकाजी वृद्ध में से केवल 9 वृद्ध ही वृद्धावस्था पेंशन का लाभ मिल रहा है और बाकि के 45 वृद्ध वृद्धावस्था पेंशन योजना से वंचित है, तो ऐसे वृद्धजनों को आर्थिक जरूरतों के लिए मजबूरी में कार्य करना पड़ता है, उन्हें अपनी आजीविका के लिए मजबूरन कार्य करना पड़ता है **(शिवा राजू, 2002)**। तथा आर्थिक अनिश्चितताएं कामकाजी वृद्धजनों के सामने आने वाली अतिरिक्त चुनौतियां हैं। बाजार की स्थितियों, प्रतिस्पर्धाओं में उतार–चढ़ाव वित्तीय असुरक्षाओं को बढ़ाता है। डिजिटल साक्षरता और प्रौद्योगिकी को अपनाना एक और बाधा उत्पन्न करता है। जैसे–जैसे बाजार ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की ओर विकसित हो रहा है, बुजुर्ग विक्रेताओं को ई–कॉमर्स और डिजिटल मार्केटिंग में संचालन करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है **(R. Shivangani)**।

वृद्धजन मुख्यता अनौपचारिक क्षेत्र Informal Sector में कार्य कर रहे, कर्ताओं को केंद्रित करते है, जो अपने जीवनयापन के लिए अपने कार्यबल को बेचने पर निर्भर है, इन्होंने अनौपचारिक क्षेत्र की कुछ विशेषताएं इस प्रकार बताई है। जो इस प्रकार है। अनियमित एवं आकस्मिक कार्यों में निरंतर लगे रहना, मजदूरी का भुगतान समय पर ना होना बल्कि टुकड़ों में होना, इस क्षेत्र में कम उम्र के बच्चों का तथा वृद्धजनों का कार्यबल में शामिल होना, समय का अवस्थित होना, आलस से भी बाधित होता हो सकता है, कार्य की भयावह स्थिति, कोई भत्ता या सामाजिक लाभ न होना, बार–बार वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में समस्याओं का उत्पन्न होना, एवं जीवकोपार्जन के लिए अपने कार्यबल पर निर्भर होना **(जेन ब्रेमन,2011)**।

भारत सरकार द्वारा शहरी स्ट्रीट विक्रेताओं की राष्ट्रीय नीति, 2009 के अनुसार भारत में स्ट्रीट वेंडर्स को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया जाता है, "जो बिना किसी स्थायी निर्मित संरचना के, बल्कि एक अस्थायी स्थैतिक संरचना के साथ जनता को बिक्री के लिए सामान पेश करता है। स्ट्रीट वेंडर कहलाता हैं।" फुटपाथों या अन्य सार्वजनिक निजी क्षेत्रों पर जगह घेरकर वस्तुएं बेचते है, या इस अर्थ में गतिशील हो सकते हैं कि वे अपना सामान गाडी धकेलने वाली साइकिल या सिर पर टोकरियों में लेकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते है। उनका वर्णन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले अन्य सभी स्थानीय क्षेत्र विशिष्ट शब्द शामिल हैं, जैसे फेरीवाला, रेहड़ी– पटरीवाला, फुटपाथ दुकानदार, फुटपाथ व्यापारी आदि।

भारत में 65 प्रतिशत वृद्धजन प्रतिदिन की साधारण सुविधाओं के लिए समाज के अन्य लोगों पर आश्रित हैं वृद्ध महिलाओं पर अध्ययन की एक रिपोर्ट में पाया गया की 27 प्रतिशत महिलाएं आत्मनिर्भर है जो कोई ना कोई कार्य में संलग्न है **हेल्पज इंडिया रिपोर्ट।** गली विक्रेताओं में उम्र, यह एक विशेष पहलू है, जो हमें कार्यों को करने के वास्तविक पैमाने को दर्शाता है। प्रस्तुत अध्ययन में गली विक्रेताओं को 7 आयु वर्ग में विभाजित किया गया, जिसमें 6 से 14 वर्ष, 15 से 24 वर्ष, 25 से 34 वर्ष, 35 से 44 वर्ष, 45 से 54 वर्ष, 55 से 64 वर्ष, और 65 वर्ष से अधिक, की आयु तक गली विक्रेताओं है, जिसमें से सबसे अधिक गली विक्रेताओं की संख्या 25 से 34 वर्ष के थे। और 55 से 64 वर्ष में 7.8 प्रतिशत गली

विक्रेता पाए गए और 65 वर्ष से अधिक 4.8 प्रतिशत गली विक्रेता उत्तरदाताओं में वृद्ध पुरुषों की तुलना में वृद्ध महिलाएं अधिक गली विक्रेताओं के रूप में पाई गई, और इसके पीछे का कारण उनके परिवारों के द्वारा देखभाल में कमी और पति की मृत्यु, आर्थिक रूप से स्वयं को सुद्वण ना करना, जिसका परिणाम उन्हें जीवनयापन के लिए कार्य को करना पड़ रहा है **(पी. सीपाना,2022)।** परन्तु इस अध्ययन में पाया गया कि, गली विक्रेता उत्तरदाताओं में वृद्ध महिलाओं की तुलना में वृद्ध पुरुषों की संख्या अधिक पाई गई।

कामकाजी वृद्धजनों के कार्य में संलग्न होने से संबंधित साहित्यिक समीक्षा

वर्तमान समय में कार्य में संलग्न वृद्धजनों के अनौपचारिक क्षेत्र में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कार्य कर रहे वृद्धजनों पर कई शिक्षाविदों, समाजशास्त्रियों या समाजवैज्ञानिकों द्वारा किए गए विश्लेषण में मुख्यता वृद्ध कामकाजी वृद्धजनों पर अध्ययन में अभाव देखा गया यद्यपि कुछ अध्ययनों में वृद्ध विक्रेताओं की संख्या की प्रस्तुतीकरण है, जिनमें से **(अंबाती राव एवं नागेश्वर et,al. 2015) एवं (पवलराज डॉ. लायडिया 2023)** में विक्रेताओं के जीवन की गुणवत्ता एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया जिसमें उन्होंने पाया कि, विक्रेताओं के जीवन में विभिन्न समस्याएं हैं एवं उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति भी निम्न स्तर की है। यह विभिन्न कारणों से अपने इन व्यवसायों को करना पसंद करते है, और अध्ययन में कामकाजी वृद्धजनों की संख्या में 10 प्रतिशतएवं 16.7 प्रतिशत भागीदारी देखने को मिली, तथा विक्रेता लगभग 12 घंटे कार्य करते है। वही अन्य शोध अध्ययन में **(के.बी. संदीप, विकास, एवं दीपक श्रीवास्तव, 2016)** इन्होंने विक्रेताओं के सामाजिक आर्थिक अध्ययन के साथ लिंग दृष्टिकोण के आधार पर पाया कि महिलाओं की तुलना में पुरुष विक्रेताओं को कम समस्याओं का सामना करना पड़ता है एवं यहां पर वृद्ध विक्रेताओं का 10.9 प्रतिशत भागीदारी देखने को मिली वही अन्य **(चौधरी परीक्षित, समर्पित केले, 2018)** ने अध्ययन किया जिसमें यह भी पाते है, कि महिलाओं की तुलना में पुरुषों की सामाजिक आर्थिक स्थिति बेहतर है और दैनिक बाजार में विक्रेताओं की आजीविका की संरचना अत्यधिक कष्टदायक है। अधिकांश विक्रेता कार्यों को करने में सक्षम नहीं है किंतु उन्हें इस कार्य के अलावा कोई और विकल्प नहीं है। **(वी. आये. कुगहोतोली एवं बरनाली शर्मा, 2022)** वही यह अध्ययन में पाते है, कि महिलाओं की तुलना में पुरुष की भागीदारी अधिक है जिसमें 65 वर्ष से अधिक आयु के 10 प्रतिशत कामकाजी वृद्धजन थे और 71 प्रतिशत विक्रेताओं को स्थाई स्थान आवंटित किया गया था और बाकी विक्रेता अस्थाई रूप से कार्य कर रहे थे अध्ययन से पता चला कि भीड़भाड़ वाले होने से विक्रेताओं को अक्सर कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है वही **(अमृता, पी. इब्राहिम चोलक्कल, 2021)** अध्ययन में विक्रेताओं की स्वास्थ्य स्थिति को मुख्य रूप से जानने का प्रयास करते है, और पाते हैं कि, उत्तरदाताओं में 50 से 60 वर्ष के बीच 26 प्रतिशत और 60 वर्ष से अधिक 8 प्रतिशत वृद्ध कामकाजी विक्रेता सक्रिय हैं और उनकी स्वास्थ्य स्थिति उत्तम नही है उन्हें स्वास्थ्य संबंधी कई प्रकार की समस्याएं है परंतु फिर भी यह अपने जीवन को संचालित करने के लिए समाज के उच्च वर्ग एवं मध्यम वर्ग को गलियों में जा जाकर वस्तुओं को कम दाम में पहुंचा रहे है, और अनौपचारिक कार्य बल में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करते है वही **(आर.एम. दानी, रानी हर्मावती, 2017)** ने कामकाजी विक्रेताओं के बीच नीतियों को लागू करने वाले एवं विभिन्न संगठनों ने इन विक्रेताओं के जीवन को उत्तम बनाने वाले संगठनों की भूमिका क्या है उन पर विश्लेषण किया यह बताते है, कि विक्रेताओं को कार्यों से संबंधित सभी नीतियों की

जानकारी है तथा उन्हें नीतियों पर बोलने का भी अधिकार है किंतु प्रस्तुत अध्ययन में वृद्ध कामकाजी विक्रेताओं को किसी भी प्रकार की नीतियों एवं संगठनों के कार्यों की जानकारी नहीं है तथा उन्हें नीतियों एवं संगठनों के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है क्योंकि क्षेत्रीय स्तर पर अभी भी जागरूकता का अभाव देखने को मिलता है।

उपरोक्त साहित्यिक समीक्षा के अध्ययन से पता चलता है कि, समाज में वृद्ध कामकाजी वर्ग कार्यबल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो समाज में अपने छोटे–छोटे कार्यों द्वारा ही सही अपनी सेवाएं समाज तक पहुंचा रहे हैं चाहे वह गली विक्रेताओं के रूप में हो या फुटपाथ बाजार या एक स्थिर स्थान पर बैठकर वस्तुएं बेच रहे हैं इसी कामकाजी कार्यबल को अक्सर नजरअंदाज किया जाता है जो विभिन्न कार्यों मे महत्वपूर्ण योगदान देते है। प्रस्तुत अध्ययन में कामकाजी वृद्धजनों (60 वर्ष) को मुख्य केंद्रबिंदु मानकर उनके सामाजिक–आर्थिक, स्वास्थ्य एवं काम करने के कारणों का गहन अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य

- कामकाजी वृद्धजनों की सामाजिक आर्थिक स्थिति को जानना।
- कामकाजी वृद्धजनों के कार्य में संलग्न होने कारणों को जानना।
- कामकाजी वृद्धजनों की स्वस्थ्य समस्याओं और चुनौतियों को समझना।

अध्ययन की प्रासंगिकता

प्रस्तुत अध्ययन कामकाजी वृद्धजनों पर आधारित है। जो समाज के सीमांतवर्ग एवं निम्न स्तर पर कार्य कर रहे बाजार विक्रेता, सड़क के किनारे या गली मे जाकर सामान बेचने वाले वृद्धों की सामाजिक आर्थिक स्थिति व समस्या एवं चुनौतियों को पता लगाना है, तथा वृद्ध विक्रेताओं के प्रति बेहतर समझ विकसित करना, जिससे उन्हें समाज में एक उचित स्थान प्रदान करने में मदद कर सके। नीति निर्माता के जागरूकता और वृद्धों की आजीविका बेहतर करने के लिए क्या अन्य नीतियां या सुविधा प्राप्त कराया जा सकता है। उस पर विचार किया जा सकें। वृद्ध विक्रेताओं के जीवन के समस्याएं एवं चुनौतियों को कम प्रभावी किया जा सकें। इसके अलावा प्रस्तुत अध्ययन समाज में वृद्धों के प्रति नीति निर्माताओं को स्त्रोत के रूप में मदद कर सकता है।

अनुसंधान पद्धति

वर्तमान शोध अध्ययन लखनऊ शहर में कार्य मे संलग्न वृद्धजनों वह वृद्ध विक्रेता जो वस्तुएं बेचने के लिए सड़क के किनारे बैठते या गलियों में जाकर वस्तुओं को बेचने वाले विक्रेताओं एवं एक स्थाई स्थान पर दुकान आदि कामकाजी वृद्धजनों पर आधारित है अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक एवं अन्वेषणात्मक अध्ययन है। निदर्शन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन को चयन किया गया है। निदर्शन का आकर 54 कामकाजी वृद्धजनों तक सीमित है एवं आंकड़ों के संग्रह के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय तथ्य संकलन सामग्री का प्रयोग किया गया है जिसमें अवलोकन विधि अर्धसंरक्षित साक्षात्कार और संरक्षित प्रश्नावली अनुसूची वैयक्तिक अध्ययन तथा द्वितीयक आंकड़ों के संग्रह के लिए प्रकाशित आलेख, प्रालेख, इंटरनेट, पुस्तकों से इत्यादि के आंकड़ों के संकलन के लिए प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की सीमाएं

प्रस्तुत शोध अध्ययन लखनऊ नगर के कामकाजी वृद्धजनों (अनौपचारिक क्षेत्र) पर आधारित है। यह

अध्ययन लखनऊ क्षेत्र और आयु के आधार पर (60 वर्ष या उससे अधिक आयु) वृद्ध कार्यरत उत्तरदाताओं का सम्मिलित अध्ययन है। यह अध्ययन अन्य क्षेत्र से तथा (60 वर्ष की आयु से कम) कार्यरत उत्तरदाताओं को सम्मिलित नहीं करता है।

अध्ययन के परिणाम एवं चर्चा

कामकाजी वृद्धजनों का सामाजिक आर्थिक विवरण

निम्नलिखित भाग वर्तमान अध्ययन के संभावित परिणामों के प्रतिशत प्रस्तुत करता है जिन्हें तालिका के द्वारा दर्शाया गया है प्रस्तुत भाग में प्राथमिक डाटा के आधार पर कामकाजी वृद्धजनों की सामाजिक आर्थिक विवरण को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम से पता चलता है कि, कार्य में संलग्न वृद्धजनों में 72.77 प्रतिशत वृद्ध पुरुष एवं 27.77 प्रतिशत वृद्ध महिलाएं शामिल है। जो दर्शाता है कि, महिलाओं की तुलना में पुरुष कार्य में अधिक सक्रिय है(तालिका स.1देखें)। आयु के आधार पर अधिकतर वृद्धजन 60 से 65 वर्ष की आयु वर्ग अंतराल में है। 66 से 70 वर्ष की आयु वर्ग अंतराल में 29.64 प्रतिशत उत्तरदाता सम्मिलित है। क्योकि यह कार्य करने मे सक्षम है। 71 से 77 वर्ष की आयु वर्ग अंतराल में 14.8 प्रतिशत उत्तरदाता सम्मिलित है, तथा अध्ययन में 78 वर्ष से अधिक उत्तरदाताओं में 11.11 प्रतिशत वृद्धजन सम्मिलित है जिसमें से सबसे अधिकतर कार्य में संलग्न वृद्धजन 60 से 65 वर्ष की आयु वर्ग अंतराल में शामिल है (तालिका स.1देखें)। सामाजिक श्रेणी में मुख्यता उत्तरदाताओं की भागीदारी ओ.बी.सी. वर्ग मे 50 प्रतिशत है। सामान्य वर्ग के उत्तरदाताओं में 20.37 प्रतिशत एवं एस. सी. वर्ग के उत्तरदाताओं में 29.62 प्रतिशत वृद्धजन कार्य में सम्मिलित पाए गए तथा एस.टी. वर्ग में कोई उत्तरदाता नहीं है (तालिका स.1देखें)। धर्म के आधार पर 55.55 प्रतिशत उत्तरदाता हिंदू धर्म से संबंध रखते है, और 42.59 प्रतिशत उत्तरदाता मुस्लिम धर्म से संबंध रखते है, एवं अन्य में एक उत्तरदाता जो सिख धर्म से संबंधित है (तालिका स.1देखें)। वृद्ध कामकाजी उत्तरदाताओं में शिक्षा का स्तर अत्यधिक दयनीय पाया गया है 40.74 प्रतिशत उत्तरदाताओं में शिक्षा का अभाव है, एवं 27.77 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षित है। नाम लिख लेने एवं हिसाब कर लेने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 31.47 प्रतिशत है (तालिका स.1देखें)। वैवाहिक स्थिति के आधार पर 46.29 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित है, एवं 44. 44 प्रतिशत उत्तरदाता विधवा एवं विधुर है। अविवाहित 3.70 प्रतिशत और अलगाव के आधार पर 5.55 प्रतिशत वृद्ध उत्तरदाता पाए गए है (तालिका स.1देखें)।

तालिका संख्या 1. कामकाजी वृद्धजनों का सामाजिक आर्थिक विवरण

1.	**लिंग**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	पुरुष	39	72.22
	महिला	15	27.77
2.	**आयु**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	60–65	24	44.44
	66–71	16	29.64
	72–77	8	14.8
	78 से अधिक	6	11.11
3	**सामाजिक श्रेणी**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	सामान्य	11	20.37
	ओ.बी.सी.	27	50
	एस.सी.	16	29.62
	एस.टी.	–	–
4.	**धर्म**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	हिन्दू	30	55.55
	मुस्लिम	23	42.59
	अन्य	1	1.85
5.	**शिक्षा का स्तर**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	शिक्षित	15	27.77
	अशिक्षित	22	40.74
	नाम लिख लेते है	12	22.22
	हिसाब कर लेते है	5	9.25
6.	**वैवाहिक स्थिति**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	विवाहित	25	46.29
	अविवाहित	2	3.70
	विधवा/विधुर	24	44.44
	अलगाव	3	5.55
7.	**परिवार का प्रकार**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	एकल	31	57.40
	संयुक्त	14	25.92
	परिवार नही है	9	16.66
	योग	**54**	**100**

स्त्रोतःक्षेत्रीय डाटा

परिवार के प्रकार में अधिकतर (57.40 प्रतिशत) उत्तरदाता एकल परिवार से संबंध रखते है। 25. 92 प्रतिशत वृद्धजन संयुक्त परिवार से आते है, एवं 16.66 प्रतिशत ऐसे कामकाजी वृद्धजन है जिनके परिवार नही है जो ऐसे लोग है जिन्हें परिवार से निकाल या छोड़ दिया गया है तो वह स्वयं को परिवार का हिस्सा नहीं मानते है (तालिका स.1देखें)।

कामकाजी वृद्धजनों का कार्य संबंधित विवरण

अध्ययन के परिणाम से अधिकतर 33.33 प्रतिशत कार्य में संलग्न वृद्धजन सब्जी बेचने का कार्य करते है। 20.37 प्रतिशत वृद्धजन दुकानों पर कार्य करते है यह दुकान (गुमटी) उनके परिवार द्वारा खोली गई ताकि वह वहां बैठे और चार पैसे कमाए और साथ ही साथ व्यस्त रहेंगे तो अकेलेपन से दूर रहेंगे। 12.96 प्रतिशत अपने घर के व्यवसाय में सहायक के रूप में कार्य करते है, और व्यस्त रहते है। 5.55 प्रतिशत ठेले पर अपना सामान बेचते है, तथा 3.70 प्रतिशत वृद्धजन रिक्शा चलाते है, एवं अन्य में 16.66 प्रतिशत कार्यरत वृद्धजन जो सड़क पर पेन, टिशू पेपर या अन्य रोजमर्रा की वस्तुएं बेचते है (तालिका स. 2देखें)। दैनिक आय के आधार पर 20.37 प्रतिशत उत्तरदाता 200 से कम दैनिक आय कर पाते है। अधिकतर (51.85 प्रतिशत) कार्य में संलग्न वृद्ध दिन का 200 से 400 रुपये के मध्य में कमाते है। 401 से 600 रुपये के मध्य 12.96 प्रतिशत कमाते है एवं 601 से अधिक 14.81 प्रतिशत वृद्धजन कमाते है जिससे पता चलता है कि, अधिकांश वृद्धजन निम्न स्तर की आय में काम करते है (तालिका स.2देखें)। कार्य की अवधि में 40.74 प्रतिशत वृद्धजन 4 से 5 घंटे कार्य करते है। 33.33 प्रतिशत कामकाजी वृद्धजन 6 से 7 घंटे कार्य करते है अधिकतर वृद्धजन यही अवधि में कार्य करते है। 8 से 9 घंटे 11.11 प्रतिशत उत्तरदाता कार्य करते है। 10 से अधिक घंटे के लिए 14.81 प्रतिशत उत्तरदाता ही कार्य करते है। आंकड़ों से पता चलता है कि अधिकतर उत्तरदाता अंशकालिक समय के लिए कार्य कर रहे है (तालिका स.2देखें)।

तालिका संख्या 1. कामकाजी वृद्धजनों का कार्य संबंधित विवरण

8.	**आप क्या कार्य करते है।**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	दुकान	11	20.37
	सब्जी	18	33.33
	ढ़ेला	3	5.55
	रिक्शा	2	3.70
	कपड़े	4	7.40
	सहायक के रूप में	7	12.96
	अन्य	9	16.66
9.	**दैनिक आय**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	200 से कम	11	20.37
	201–400	28	51.85
	401–600	7	12.96
	601 से अधिक	8	14.81
10.	**कितना समय कार्य करते है**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	4–5 घण्टे	22	40.74
	6–7 घण्टे	18	33.33
	8–9 घण्टे	6	11.11
	10 से अधिक	8	14.81
11.	**इससे पूर्व क्या काम करते थे**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**

	यही कार्य करते थे	19	35.18
	जॉब करते थे	14	25.92
	मजदूरी	26	29.62
	कुछ नही	5	9.25
12.	**आपको किसी प्रकार का भत्ता प्राप्त होता है**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
	हाँ	9	16.66
	नही	45	83.33
	योग	**54**	**100**

स्त्रोतः क्षेत्रीय डाटा

यदि पूर्व कार्य की बात करें तो 35.18 प्रतिशत उत्तरदाता पहले से जो कार्य कर रहे थे वही कार्य कर रहे है जिसमें अधिकतर लोग दुकानों पर काम कर रहे थे। 25.92 प्रतिशत लोग निजी क्षेत्र में काम कर रहे थे और 29.62 प्रतिशत लोग मजदूरी करते थे 9.25 प्रतिशत वह लोग है जो पहले कुछ नहीं करते थे, कुछ नहीं करने वाले में अधिकतर महिलाएं शामिल है जो घर पर ग्रहणी के रुप मे थी (तालिका स.2देखें)। वृद्धावस्था पेंशन के आधार पर अधिकतर 83.33 प्रतिशत वृद्धजनों को किसी भी प्रकार की पेंशन नही मिलती है तथा वह सरकार द्वारा चलाइरही वृद्धावस्था पेंशन के बारे में जागरूक भी नही है, तथा 16.66 प्रतिशत ही ऐसे वृद्धजन है जिन्हें पेंशन मिल रही है वह ऐसे वृद्ध है जो शिक्षित है और उच्च्य स्तर आय भी है किंतु निम्न स्तर वाले वृद्धजन पेंशन से वंचित है (तालिका स.2देखें)।

कामकाजी वृद्धजनों का कार्य करने का कारण संबंधित विवरण

अध्ययन के परिणाम बताते है कि, 24.07 प्रतिशत उत्तरदाताओं के कार्य करने के पीछे उनकी मूलभूत सुविधाओं की पूर्ति करने के लिए कार्य करना पड़ रहा है। 16.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि घर पर खाना और इज्जत दोनों मिलती रहेगी। 20.37 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कोई सहारा नही है। 12.96 उत्तरदाता जीवनयापन के लिए कार्य करना पड़ता है। 11.11 प्रतिशत उत्तरदाताओं के द्वारा जब तक शरीर में ताकत है शरीर साथ देता है तब तक कार्य करते रहेंगे। 14.81 प्रतिशत उत्तरदाता द्वारा बताया गया कि, उन्हें व्यस्त रहना अच्छा लगता है लोगों से बातचीत होती रहती है, किंतु अधिकतम वृद्धजन मजबूरी में जीवनयापन के लिए संघर्ष करते हुए कार्य कर रहे है, जो जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को उजागर करता है **(ग्रफ संख्या 1.देखें)**।

ग्रफ संख्या 1. कार्य करने का कारण संबंधित विवरण

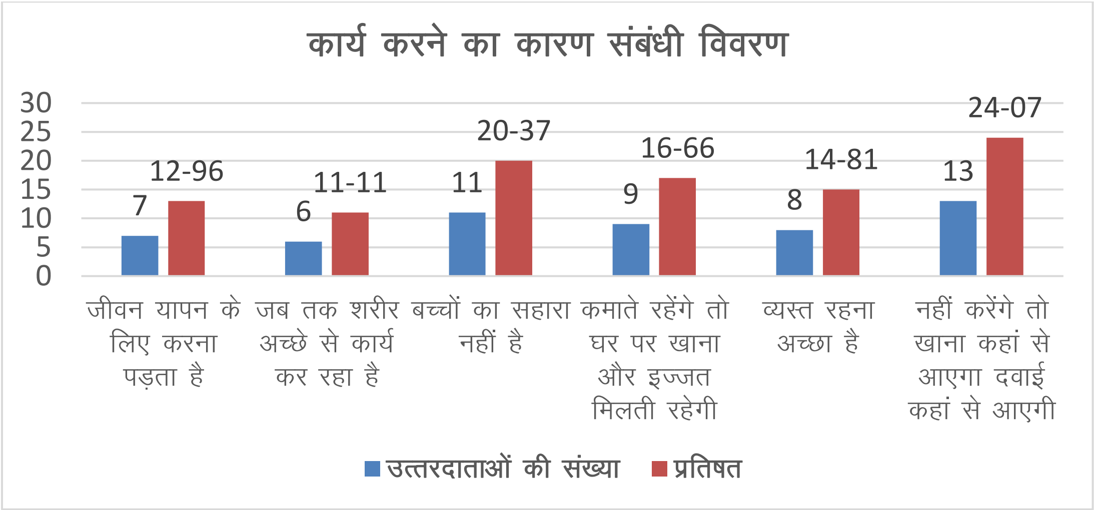

स्त्रोतः क्षेत्रीय डाटा

कामकाजी वृद्धजनों का कार्य संबंधित विवरण

वित्तीय सुरक्षा के आधार पर 27.71 प्रतिशत ऐसे उत्तरदाता है जो घर को अपनी संपत्ति बताते है। 9.25 प्रतिशत उत्तरदाता जमीन को वित्तीय सुरक्षा के रूप में बताते है। 11.11 प्रतिशत उत्तरदाता बैंक सेविंग को वित्तीय सुरक्षा बताते है, तथा 52. 85 प्रतिशत उत्तरदाताओं की संख्या ऐसी है जिसके पास किसी भी प्रकार की वित्तीय सुरक्षा नहीं है जो कार्य में संलग्न होने का महत्वपूर्ण कारण है (**तालिका संख्या 3. देखें**)।

तालिका संख्या 3. कामकाजी वृद्धजनों का कार्य संबंधित विवरण

13.	वित्तीय सुरक्षा क्या है	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
	घर	15	27.77
	जमीन	5	9.25
	बैंक सेविंग	6	11.11
	कुछ नहीं	28	51.85
	योग	**54**	**100**

स्त्रोतः क्षेत्रीय डाटा

कामकाजी वृद्धजनों की स्वास्थ्य स्थिति संबंधित विवरण

स्वास्थ्य स्थिति में 18.51 प्रतिशत उत्तरदाता स्वास्थ्य में स्वस्थ महसूस करते है। 14.81 प्रतिशत उत्तरदाता शारीरिक समस्याओं का सामना कर रहे है, जैसे–पैर से विकलांग, एक आंख का खराब होना, एक हाथ ना होना आदि शारीरिक समस्याएं है, जो उनके कार्य में बाधा डालते है। 40.74 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से अस्वस्थता का अनुभव करते है–जैसे बी.पी., घुटनों का दर्द, मधुमेह इत्यादि समस्याएं है। 25.92 प्रतिशत उत्तरदाता अपनी स्थिति को ठीक बताते है लेकिन जब अस्वस्थता का स्तर इतना अधिक हो तो हम इसे संतोषजनक नहीं मान सकते है **(ग्रफ संख्या 2.देखें)**।

ग्रफ संख्या 2. कामकाजी वृद्धजनों की स्वास्थ्य स्थिति संबंधित विवरण

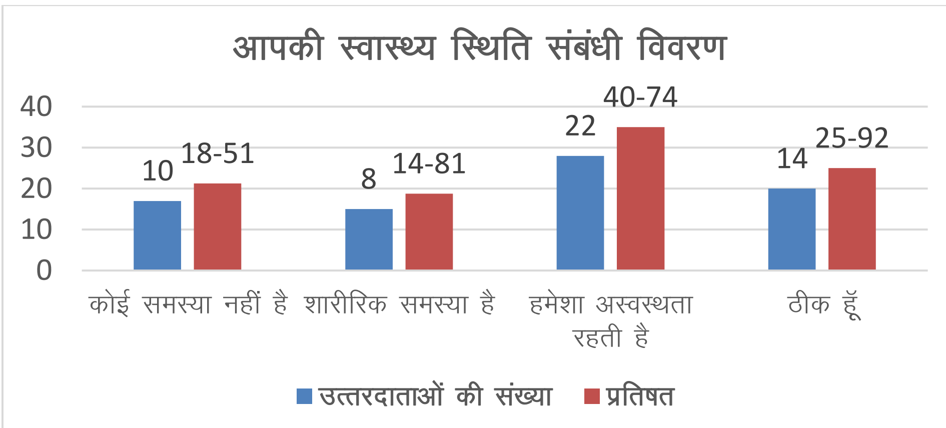

स्त्रोतः क्षेत्रीय डाटा

कामकाजी वृद्धजनों का कार्य के प्रति संतोष का विवरण

कार्य के प्रति संतोष की स्थिति में 33.33 प्रतिशत उत्तरदाता अपने कार्य से संतुष्ट है जो सकारात्मकता को दर्शाता है 9.25 प्रतिशत उत्तरदाता जो अपने काम से अत्यधिक संतुष्ट है। वह कार्य को करके स्वयं को संतुष्ट और आत्मनिर्भर पाते है। 37.03 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य बताते है। 14.81 प्रतिशत तथा उत्तरदाता कार्य को करके असंतुष्ट है क्योंकि वह स्वयं को कार्य करने में असक्षम पाते है, तथा 5.55 प्रतिशत उत्तरदाता अत्यधिक असंतुष्टता को स्वीकारते है क्योंकि कुछ लोगों की स्थिति इतनी गंभीर है कि, वह कार्य करने योग्य नहीं है किंतु उनका मानना है कि वह कार्य को केवल जीने और पेट भरने के लिए करते है क्योंकि भीख मांग कर जीना उन्हें मंजूर नहीं है वह सम्मान और गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते है।

तालिका संख्या 3. कामकाजी वृद्धजनों का कार्य के प्रति संतोष का विवरण

14.	क्या आप इस कार्य से संतुष्ट हैं	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
	संतुष्ट	18	33.33
	अधिक संतुष्ट	5	9.25
	सामान्य	20	37.03
	असंतुष्ट	8	14.81
	अधिक असंतुष्ट	3	5.55
	योग	**54**	**100**

स्त्रोतः क्षेत्रीय डाटा

कामकाजी वृद्धजनों का शोध अध्ययन से संबंधित वैयक्तिक अध्ययन

कमलादेवी (उम्र 86 वर्ष) यह एक सब्जी की छोटी सी दुकान लगाती है। बचपन में चोट लगने से इनकी एक आंख खराब हो गई थी और उन्हें अब उस आंख से दिखाई नहीं देता है। जब मै उनसे मिलने गई तब वह थोड़ा बीमार थी। उनसे बात करने पर उन्होंने बताया कि, उनके पति की मृत्यु को लगभग 20 वर्ष हो गए है। उनके दो बच्चे थे। एक पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्र की शादी हो गई थी, और शादी के बाद में बेटे की एक दुर्घटना मे मृत्यु हो गई थी। बेटी की शादी कर दिया तो वह ससुराल मे हैं और बेटे की मृत्यु के बाद से बहू अधिकतर अपने मायके मे रहना पसंद करती है। उन्होंने बताया कि *बेटे की मृत्यु के बाद "बहू बिना लगाम की घोड़ी" हो गई है,* वह कुछ भी नही सुनती है उसे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैने खाना खाया है या नहीं खाया है मै चाहे जितना बीमार हूं बहू देखने तक नही आती है। मुझे अपनी बीमारी के इलाज के लिए और एक वक्त की रोटी के लिए यह सब्जी की दुकान लगानी पड़ती है। उससे वह किसी भी प्रकार की बचत नहीं कर पाती और अभी वह छोटी सी सब्जी की दुकान ही उनके जीवन का सहारा है। उन्हें अपने जीवनयापन के लिए यह कार्य करना पड़ता है। अन्य उत्तरदाता **फुलमती (उम्र 73 वर्ष)** से बात करने पर उन्होंने बताया उनके दो बेटे और एक बेटी है बेटी की शादी कर दी है मेरी बेटी मुझे अपने घर बुलाती है रहने के लिए लेकिन बेटी के ससुराल में कहां बसर होगी। दोनों बेटे भी शादीशुदा है, और बड़े बेटे के तीन बच्चे हैं। मेरे पति की मृत्यु हुई उसके 9 साल बाद मेरे बड़े बेटे की मृत्यु हो गई, और मैं अपने बड़े बेटे के साथ ही रहती थी पिछले दिवाली के समय बड़ी बहू की भी मृत्यु हो गई अब उसके तीनों बच्चे मेरे साथ ही रहते है। मेरी छोटी बहू मुझे खाना तक नहीं पूछता है और मुझसे कहती है कि, तुम उन बच्चों को छोड़ दो और मेरे साथ रहो तो मैं तुम्हें खाना दूंगी, वह उन बच्चों से जलती है, मेरा छोटा बेटा भी उसे कुछ नहीं कहता है, लेकिन मैं उन बच्चों को नहीं छोड़ सकती क्योंकि उन दोनों के माता–पिता नही हैं मेरे मायके वाले मुझे राशन भेज देते है अभी जल्दी ही मैं मायके गई थी मुझे वहां बहुत अच्छा लगता है बड़े बेटे के बच्चे खाना बना लेते हैं लेकिन रोटी नहीं बना पाते है जब मैं ठीक रहती हूं तब मैं रोटी बना लेती हूं जब बड़ी बहू थी तब वह खाना बना कर देती थी और अब मेरा दुर्भाग्य है कि मैं बच्चों को खाना भी नहीं बना कर दे पाती। सब्जी की दुकान के बारे में बताती हैं कि, तीन दिन से एक पाई की कमाई नहीं हुई है आज 50 रू. की कमाई है सामान भी सब खराब हो गया था तबीयत ठीक रहती है तो दुकान लगाते हैं वरना नहीं लगाते है लोग तो कहते है कि, ना जाया करो *लेकिन क्या करें जब किस्मत*

में ही यही लिखा है और आ जाते हैं तो मन भी बहला रहता है।

यह बताते समय बहुत ही भावुक हो गई थी यह शरीर से बहुत ही दुबली पतली तथा इन्हें कम सुनाई देता है आवाज बहुत धीमी जिससे मुझे सुनने के लिए बहुत ध्यान केंद्रित करना पड़ता था

शोध अध्ययन का निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन से पता चलता है कि, समाज में कामकाजी वृद्धजनों में वृद्ध महिलाओं की तुलना में वृद्ध पुरुषों की भागीदारी अधिक है, एवं कामकाजी वृद्धजनों की आयु 60 से 65 वर्ष की आयु वर्ग अन्तराल में आते है यह अधिक सक्रिय है, तथा वर्ग एवं धर्म के आधार पर भी समाज में वृद्धजनों की भागीदारी में विविधता देखने को मिली है, जिसमें अधिकतर वृद्धजन हिंदू धर्म के ओ.बी.सी. वर्ग से आते हैं एवं कार्यरत वृद्धजनों का शिक्षा का स्तर अत्यधिक दयनीय है विवाहित कामकाजी वृद्धजनों एवं विधवा व विधुर का अनुपात लगभग समान है तथा अधिकतर वृद्धजन एकल परिवार से आते है जिससे पता चलता है कि, पारिवारिक संरचना इस स्थिति में विशेष महत्व रखती है अधिकांश वृद्धजनों के पास आर्थिक सुरक्षा नहीं है जिसके कारण उन्हें अपने जीवकोपार्जन के लिए कार्य करना पड़ रहा है क्योंकि अब इनके पास आर्थिक सुरक्षा नही है जिससे इन्हें छोटे–छोटे कार्य करने पड़ रहे है जिसमें अधिकतर लोग सब्जी की दुकान लगाते है, एवं (गुमटी) दुकान पर बैठते हैं या फेरी वाले का कार्य करते है जो कि उनकी आय के स्तर पर प्रभाव डालता है इसी कारणवश उनकी आय निम्न स्तर से मध्यम आय की है जिसमें इनकी रोजी–रोटी ही चल पाती है। कुछ ही कामकाजी वृद्धजन ऐसे है जिनकी दैनिक आय संतोषजनक है। और उनकी स्थिति दयनीय होने के उपरांत भी इन्हें किसी प्रकार का लाभ नहीं मिल पाता है। उनके कार्य करने का यह भी एक विशेष कारण है साथ ही विभिन्न चुनौतियों के रूप में वृद्धावस्था में स्वास्थ्य एक नाजुक पहलू है जो इनके जीवन में बाधा बन जाता है अधिकतर वृद्धजन अस्वस्थ है। वह अपने शारीरिक समस्याओं के साथ कार्य करने को मजबूर है, क्योंकि यही काम उनके जीवन का एकमात्र सहारा है और उनके पास किसी प्रकार की वित्तीय सुरक्षा भी नही है जिसके सहारे वह जीवन यापन कर सकें। अध्ययन से कामकाजी वृद्धजनों के जीवन की स्थिति का पता चलता है कि, अधिकांश वृद्धजन आर्थिक विवशता के कारण कार्य में संलग्न है और न्यूनतम वृद्धजन ही है जो सुरक्षा और आत्मनिर्भर होने के लिए कार्य में संलग्न है।

संदर्भ सूची

1. Ahuja, R. (2021). *"Social Problem in India,"* Fourth Edition, Rawat Publication: New Delhi.
2. Aye, K. V., & Sarma, B. (2022). Street vending and urban public space: A study of street Vendors in Beltola Market, Guwahati. *International Journal of Health Sciences*, 6(S8), 150–172. https://doi.org/10.53730/ijhs.v6nS8.9667
3. Chakraborty, Parikshit and Samarpita Koley (2018) Socio-Economic View on Street Vendors: A Study of a Daily Market at Jamshedpur. *Journal of Advanced Research in Humanities and Social Science* Volume 5, Issue 1 - 2018, Pg. No. 14-20.
4. Dr. Ambati Nageswara Rao, (2015) Working Conditions and Quality of Life of Street Vendors in City of Ahmedabad. *International Journal of Social Science & Interdisciplinary Research* ISSN 2277-3630 IJSSIR, Vol. 4 (12), pp. 20-31.

5. Help age India 2023 report, *"Women and Ageing:Invisible or Empowererd?,"* https://www.helpageindia.org/wp-content/uploads/2023/06/Women-Ageing-Invisible-or-Empowered-a-HelpAge-India-2023-report.pdf

6. Jurgen Dellera,b, Patrick M. Liedtkec and Leena M. Maxina, (2009). Old Age Security And Silver Workers And Empirical Survey Identify Challenges For Company Insurance And Society, *"The International Association for the Study of Insurance Economics"* 1018-5895/09www.palgrave-journals.com/gpp/

7. Brahman, Jan 2011, The Informal Sector Economy As A Global Trend. http://www.wiego.org/sites/default/files/resources/files/Breman-Inf-Sector-Global-Trend.pdf

8. K. V., &Sarma, B. (2022). Street vending and urban public space: A study of street Vendors in Beltola Market, Guwahati. *International Journal of Health Sciences*, 6(S8), 150–172.

9. K. Narendra and GNVP Babu, 2019. Problem Prospect of Street Vendor I Study with Reference to Visakhapatnam City *"Research Gate,"* ISSN No. 224 -7455, Vol. 11, Issue 6, PP. 2500 – 2516.

10. Kumar Sandeep And Vikash Srivastava (2016) Socio-Economic Condition Of Street Venders from The Gender Perspective. *Journal of Economic & Social Development,* Vol. – XII, No. 2, ISSN 0973 – 886X.

11. National Street vendor policy, 2009 and Street Vendors Act https://www.slideshare.net/slideshow/national-street-vendor-policy-2009-and-street-vendors-act-2014/43976320

12. P. Seepana (2022). "Urban Street venders in india."https://www.researchgate.net/publication/359618673

13. P. Amrita and Ibrahim Chulhakal, 2021. Social Economic and Health Condition of Street Vendors in KazhiKode*, "International Journal of Research Publication and Review"* Vol. 2, No. 10, PP. 381 -387.

14. Pavulraj J, DR. Lydia J, (2023) A Study on Socio-Economic Conditions and Quality Life of Street Vendors in Gandhi Market, Tiruchirappalli, Tamil Nadu, India. *Journal Of the Asiatic Society of Mumbai,* ISSN: 0972-0766, Vol. XCVI, No.5,

15. Population Aging Alternative Measures of Dependency and Implication for the Future of Work URL https://webapps.ilo.org/static/english/intserv/working-papers/wp005/index.html#:~:text=specific%20policy%20options.-,Population%20ageing%20and%20labour%20force%20trends%20among%20older%20age%20cohorts,rates%20for%20women%20and%20men.

16. Thousand Peter the structure dependency of the elderly a creation of social policy in the 20th century URL: https://www.cambridge.org/core/journals/ageing-and-society/article/structured-dependency-of-the-elderly-a-creation-of-social-policy-in-the-twentieth-century/52F8E7E344E908386E878F53DB25CF6C

17. Rathore, Shivangani, "Study of the Impact of Digitalisation on the Businesses of Urban Statement In Mumbai," Synopsis of the Research Proposal for PH.D Link https://shodhgangotri.inflibnet.ac.in/bitstre

am/20.500.14146/13816/1/synopsis%20-%20mark%20menezes.pdf

18. Rina Hermawati, Dani Mohammad Ramadhan (2017) Behind Street Vendors Stall A Case Study on How Organizations Plays Role on Implementing Policies. *Advance In Economics, Business And Manegment Research* (Ambmr)Volume 43.
19. S. Siva Raju. (2011). "Studies on Ageing in India: A Review," BKPAI Working Paper No. 2, United Nations Population Fund (UNFPA), New Delhi.
20. Saradhamani , S. K.S.Kavitha and K.Sindhuja (2019) Challenges Faced By Women Street Vendors In Karur. *THINK INDIA JOURNAL* ISSN:0971-1260 Vol-22- Issue.
21. Saha, D. (2011). Working life of street vendors in Mumbai. *Indian Journal of labour economics.*Vol.54, No.2.
22. Teles, S., Ribeiro, O. (2019). Activity Theory. In: Gu, D., Dupre, M. (eds) Encyclopedia of Gerontology and Population Aging. Springer, Cham. https://doi.org/10.1007/978-3-319-69892-2_748-1
23. WHO's work on the UN Decade of Healthy Ageing (2021-2030)https://www.who.int/initiatives/decade-of-healthy-ageing#:~:text=Governments%2C%20international%20and%20regional%20organizations,in%20the%20Healthy%20Ageing%20Collaborative